# इकाई 10 लैटिन अमेरिका में चर्च और सामाजिक परिवर्तन

इकाई की रूपरेखा


10.1 प्रस्तावना

10.2 लैटिन अमेरिकी समाज में चर्च की भूमिका

10.2.1 ऐतिहासिक

10.2.2 चर्च के लिए हाल की चुनौतियाँ

10.2.3 समकालीन समय में नई चर्च

10.3 चर्च और राजनीति

10.3.1 परम्परागत राजनीतिक भूमिका

10.3.2 वर्तमान राजनीतिक भूमिका

10.3.3 राजनीति प्रतिस्पर्द्धा

10.3.4 धार्मिक नवाचार

10.4 समाज में चर्च पर प्रमुख सिद्धान्त

10.4.1 धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्त

10.4.2 धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और नवाचार के सिद्धान्त

10.5 सारांश

10.6 अभ्यास प्रश्न


## 10.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आपका परिचय लैटिन अमेरिकी समाज में चर्च की भूमिका के सम्बंध में कराया जाएगा। अध्ययन करते समय आप संक्रमण काल में समाजों में धर्म के अध्ययन में लगातार प्रयोग की जाने वाली अनेक प्रमुख संकल्पनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे। इसका उद्देश्य यह है कि सामान्य शब्दों में यह स्पष्ट किया जाए कि लैटिन अमेरिकी समाज में चर्च ने किस प्रकार अपनी भूमिका निभाई, साथ ही समकालीन समय में उसकी क्या भूमिका रही है।

समाज में चर्च की भूमिका के बारे में विद्वानों द्वारा जाँच परख करने का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। मीडिया लगातार अपनी रिपोर्टों में उत्तरी आयरलैण्ड, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, बोसनिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका में होने वाले धार्मिक प्रतिद्वन्द्वता या संघर्ष के सम्बंध में अपनी राय प्रकट करता रहा है। ईरान की क्रान्ति आज भी पश्चिम के एक बड़े भाग में अशांति फैलाए हुए है, क्योंकि ये लोग 'चर्च और राज्य को अलग' करने के पवित्र सिद्धान्त को बदलना चाहते हैं। अभी हम संयुक्त राज्य अमेरिका और इसी प्रकार लैटिन अमेरिका में धर्म का नया चेहरा देख रहे हैं, जो राजनीति क्षेत्र में प्रभावी रूप से एक अखाड़ा या कार्यक्षेत्र बना हुआ है, और प्रक्रिया में सामाजिक परिवर्तन के मुद्दों पर अपनी मोहर लगा रहा है। अधिकतर पूरे विश्व में विशेषकर लैटिन अमेरिका में लोकतान्त्रिक प्रक्रिया चल रही है, कार्यनीतिक नवाचार के नए युग को परिवर्तन के लिए उत्तेजित किया जा रहा है जिसमें नई रोशनी में सामाजिक परिवर्तन प्रभावित धार्मिक मुद्दों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें धर्म निरपेक्ष के मौजूदा प्रबल सिद्धान्तों को संशोधित करने की भी आवश्यकता है। आप आगे के भागों में यह देखने में समर्थ होंगे कि किस प्रकार से लैटिन अमेरिका में चर्च की भूमिका अभी भी लगातार प्रभावी है जिसमें अभी भी परिवर्तन करने की आवश्यकता बनी हुई है।

## 10.2 लैटिन अमेरिकी समाज में चर्च की भूमिका

लैटिन अमेरिका में रहने वाले अधिकतर लोग स्पेन और पुर्तगाली भाषी राष्ट्र के लोग हैं जो रोमन कैथोलिक चर्च से सम्बंधित हैं। यहाँ अत्यधिक संख्या में कैथोलिक चर्च की उपस्थिति का प्रमुख कारण स्पेन और पुर्तगाल का यह क्षेत्र औपनिवेशिक क्षेत्र रहा है। सामान्य तौर पर औपनिवेशिक काल 15वीं शताब्दी में आरंभ हुआ था और 16वीं शताब्दी के मध्य तक यह पूर्ण रूप से संगठित हो चुका था। और 18वीं शताब्दी के शुरू होने तक समाप्त हो चुका था। यहाँ तक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात् में लैटिन अमेरिका में कैथोलिक चर्च राजनीतिक और सामाजिक नीतियों में व्यापक प्रभाव का प्रयोग करती रही है। हाल के वर्षों में कैथोलिक चर्च लैटिन अमेरिका में प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय और अफ्रीकी धर्म के कुछ स्थानीय प्रतिरोधियों का प्रबल सामना करना पड़ रहा है।

### 10.2.1 ऐतिहासिक

समकालीन अवधि से पहले, निश्चित रूप से 1960 से पूर्व कैथोलिक चर्च आमतौर पर शक्ति के साधनों से लैस रहा है जिसमें उद्योग, सेना, भूमिधारी और सरकारी कुलीन वर्ग शामिल थे। इस गठजोड़ की प्रकृति देश और समय जिसमें स्थापित थे पर निर्भर करता था। जहाँ सामाजिक नीतियों का सम्बंध है, आमतौर पर निसक्रिय बना रहा। इसके बावजूद अपनी शक्ति को बरकरार रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रयास किए, जैसे कि 1910 के बाद मैक्सिको में क्रान्तिकारियों के शासन काल में चर्च को बनाए रखने के लिए नौकरशाही कार्यालयों और संजालों के प्रभावकारी व्यूह रचना के निर्माण द्वारा प्रमुख संस्था के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था।

परन्तु 1960 तक स्थितियाँ बदलनी आरम्भ हो गई थी। क्यूबा की क्रान्ति से विभिन्न प्रकार के दबावों की शक्ति से बदलने लगे और शहरी और औद्योगिक समाज में वृद्धि होने लगी जिसके कारण अथवा उनके सहयोग से प्रमुख सामाजिक नीतियों पर चर्च की अवस्थिति व दृष्टिकोण परिवर्तन हुआ था। यह शीत युद्ध की उच्चतम स्थिति थी तथा लैटिन अमेरिका में अधिकतर देशों में सैनिक शासन था। परन्तु सैनिक शासन में भी लैटिन अमेरिका के अनेक देशों में कैथोलिक चर्च के अन्तर्गत प्रगतिशील वर्गों का उदगम हुआ और वे स्वयं समाज में 'मूक लोगों की आवाज' बनने के लिए कटिबद्ध थे।

1960 के दशक में **विमुक्त धर्म विज्ञान** का आगमन हुआ, नीचे के स्तर के छोटे-बड़े समुदायों का निर्माण हुआ, व्यापक रूप से स्थानीय स्तर पर राजनीतिक संगठन बनने लगे जिन्हें चर्च के कार्मिक प्रोत्साहित कर रहे थे और ऐसा लग रहा था कि नए चर्च ने जन्म ले लिया है। इस नए चर्च ने असंगत सामाजिक संरचना को बदलने की आवश्यकता महसूस की। इस अवस्थिति से कुछ पुरोहित वर्ग के सदस्यों के प्रतिद्वन्द्वी या प्रतिरोधित प्राप्त की और उन्होंने निर्धनों के संगठनों के माध्यम से राजनीतिक गतिविधियों में अपनी भागीदारी पैदा की थी। कुछ पुजारी वर्ग यानी पादरी लोगों को सरकार के दमन का शिकार होना था।

1960 और 1970 के दशकों में चर्च के कार्यकारी लोगों द्वारा भागीदारी पर यह राजनीतिक सक्रियवाद था। यह लैटिन अमेरिका के संदर्भ में अपने आपमें एक नवीन या अभूतपूर्व कार्य था जिससे अत्यधिक प्रचार मिला किन्तु अधिकतर लैटिन अमेरिका में सैनिक शासन या सैनिक राजसत्ता के कारण इसका पर्दा नहीं हटा था। सम्पूर्ण क्षेत्र में व्यापक रूप से सैनिक सरकार ने अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक मार्गों को अवरूद्ध कर दिया था और यही मुख्य कारण था कि राजसत्ताधारी सरकारों के विरुद्ध कैथोलिक चर्च विरोध व प्रतिपक्ष के रूप में शक्तिशाली केन्द्र के रूप में उभर कर सामने आया था।

### 10.2.2 चर्च के लिए हाल की चुनौतियाँ

1980 के दशक के आरंभ तक में ही सैनिक सरकारों को एक के बाद एक को अपनी सत्ता छोड़नी पड़ रही थी और 1990 के दशक के पहले दौर में ही लैटिन अमेरिका में लोकतान्त्रिकीकरण की प्रक्रिया अपने चर्म बिन्दु पर पहुँच चुकी थी। केवल क्यूबा ही अभी तक इस लोकतान्त्रिक लहर से अछूता रहा था। लैटिन अमेरिका एक राष्ट्र के रूप में राजनीतिक व्यवस्था का महान लोकतान्त्रिक दबाव समूह, राजनीति दल, श्रमिक संगठन, तथा अन्य ख्यात क्षेत्र समूह मौजूद थे, इसलिए इन पर एक फिर से पाबन्दी लगा दी, या इनमें से अधिकतर पर सैनिक शासन द्वारा प्रतिबन्धित कर दिए गए थे। इस तरह से एक सक्रिय एजेण्डा का उदगम हुआ। अब समाज के पास अपना विरोध व्यक्त करने के लिए अनेक मंच मौजूद थे। इस परिवर्तित परिदृश्य में कैथोलिक चर्च का विकासवादी वर्ग के नागरिक समाज के गैर-धार्मिक वर्गों के समक्ष प्रतियोगिता के लिए भारी मुसक्कत करनी पड़ी थी। इस नए पुनःप्राणित करने से प्रतिस्पर्धा की एक मज़बूत स्थिति बनी जिससे राजनीतिक दलों, मज़दूर संघों और प्रसिद्ध समूहों में तीव्रता से सक्रियतावाद पैदा हुआ, इसलिए कुछ चर्च के नेता लोग 1960 के पहले के राजनीतिक सक्रियतावाद को फिर से लौटाने के लिए चर्चा करने लगे थे।

हाल के वर्षों में सबसे बड़ी चुनौती पोप जॉन पाल II ने खड़ी की है, उनका इस क्षेत्र के लिए नवीन सुसमाचार का आह्वान ही बड़ी समस्या बन कर खड़ी हो गई है। क्योंकि परिवर्तनशील अतिवादी सक्रिय समूह चर्च के नए रूढ़िवादी कमज़ोर पक्ष की ओर जाने लगे हैं जिससे एक बड़ी समस्या बनकर आन्दोलन के समक्ष आई है। लैटिन अमेरिका में अभी भी रूढ़िवादी लोगों और प्रगतिशील विचार वाले लोगों की निर्णायक कटुता और प्रतिरोध की स्थिति बनी हुई है। इस समय चर्च की यह आवश्यक भूमिका होनी चाहिए कि वह लोगों के दिलों और दिमाग में राजनीतिक, जागरूकता और प्रतियोगिता की भावना का संचार करें। कुछ ऐसे देश हैं जहाँ पर चर्च का राजनीतिक सक्रियतावाद का स्तर कभी नहीं पहुँच सकता है जैसे कि ब्राज़ील, निकारागुआ या पेरू में किया गया था। वास्तव में चुनौती सक्रियतावाद के लिए एक विशिष्ट प्रकार के निर्धारण में निहित है, इससे चर्च को उनकी प्रसिद्ध संसदीय क्षेत्र में हानि हो सकती है विशेषकर जहाँ पर गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोग धार्मिकता से प्रतिस्पर्द्धा कर रहे हैं।

कैथोलिक चर्च द्वारा दूसरी चुनौती का सामना कर रही है इसमें उसकी संस्थागत क्षमता तेज़ी से कम हो रही है उसे भी उसने पुनः प्राप्त करना है। सामाजिक में 1970 से लगातार कुल जनसंख्या के अनुपात में कैथोलिक पुजारियों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। यह चर्च के समक्ष वास्तविक चुनौती है। संस्थागत क्षमता को रोकने के लिए कैथोलिक चर्च को कुछ विशिष्ट प्रकार के कदम उठाने पड़ेंगे और लोगों को सक्रिय या गतिशील बनाने के लिए खास कदम उठाने पड़ेगे और हो सकता है उसे प्रतिस्पर्द्धा में स्वस्थ और जन सहयोग के कार्यों को भी आगे बढ़ाना होगा।

कैथोलिक चर्च के सामने एक और चुनौती खड़ी हुई है वह है प्रोटेस्टेंटो की उपस्थिति और उनकी धार्मिक सत्ता पर बढ़ती हुई पकड़ और उनका बढ़ता हुआ नामकरण। प्रोटेस्टेंट्स सुसमाचार भिन्न और परिवर्ती है जो व्यक्तिगत धार्मिक आवश्यकताओं पर बल देता है। इसके अतिरिक्त वे शिक्षा, बचत, मितव्ययता, ईमानदारी, व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के मूल्यों पर बल देते हैं। और इन्हीं मूल्यों के अन्तर्गत भौतिक वातावरण, पर्यावरण के सीमित साधनों से जीवन को अच्छा बनाने के सुसमाचार प्रसारित करते हैं, इसका नतीजा यह हुआ कि कैथोलिक चर्च के खर्च से बहुत सारे नए सदस्य प्रोटेंस्टेट के सदस्य बन गए।

अन्ततः, कैथोलिक चर्च के समक्ष उपर्युक्त सभी चुनौतियों को विशेष प्रकार की गुंजायन या प्रचार, भागीदारी, और राजनीतिक रूप से उत्तरदायी नागरिक समाज की पैदा की गई व्यापक चुनौतियों के

साथ इनका गहरा सम्बंध है। यह सम्मिलिन के प्रयास का समुदाय स्तर पर जाने माने प्रचार प्रदर्शन के मंचों के रूप में स्वैच्छिक संस्थाओं का बहुसंख्या में निर्मित होना आदि से प्रोटेस्टेंटों को अत्यन्त सहायता प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त, यह चुनौतियाँ लैटिन अमेरिका में राजनीतिक लोकतंत्र की सहायता और सहयोग के लिए चुनौतियाँ आवश्यक नहीं फिर भी उपर्युक्त प्रयासों को एक दूसरे से जोड़ना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

### 10.2.3 समकालीन समय में नई चर्च

किसी को भी यह तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि कैथोलिक चर्च ने किसी भी धार्मिक संगठन के मामले में, किसी भी लोकप्रिय समुदाय और समग्र या दीर्घ सामाजिक संरचनाओं के बीच माध्यम का काम किया है। अन्य धार्मिक और धर्म निरपेक्ष समूहों से प्रतिस्पर्द्धा के दौरान निचले स्तर पर लोगों का शक्तिशाली बनाने के लिए पाठ पढ़ा है। धार्मिक बैठकों की बहुसंख्यक श्रृंखला के माध्यम से उसने प्रयास किए हैं कि लैटिन अमेरिका के लोगों को किस प्रकार से सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूहों में मिलकर काम करना सिखाया है।

कैथोलिक चर्च ने पूँजीवाद और समाजवाद के अतिवादी स्वरूपों के बीच मध्यम या बीच का धरातल बनाने के लिए प्रयास किए हैं। चर्च ने अपने कार्यालय के समाचार पत्रों के माध्यम से इस विषय पर बल दिया है कि ये आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के अतिवादी स्वरूप ईसाई जीवन शैली, सरकारों के सिद्धान्त या विचारधाराएँ अनावश्यक हैं। फिर भी 1998 में पोप कास्टरों ने क्यूबा में दौरा किया और आशा व्यक्त की कि क्यूबा में धार्मिक स्वतंत्रता होगी। इसके अच्छे परिणाम सामने आए वहाँ पर हाल में धार्मिक स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है।

इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभ में, कैथोलिक चर्च के संस्थागत आयाम एक बार कठिनाई में पड़ गए थे। ब्राज़ील, पेरू, ई एल साल्वाडोर, तथा चिली में जहाँ कैथोलिक चर्च एक बार राजनीति में अत्यधिक सक्रिय हो उठी थी, इससे उसकी संस्थागत क्षमता में कमी आई और प्रगतिशील सक्रियतावाद के विस्तार में कमी आई। यह विशेष रूप से सच है कि यदि आप व्यापक राजनीतिक एजेंडा में शामिल हो जाए, इसके परिणाम स्वरूप समाज में और अधिक समतावादी शक्ति संरचना के पक्ष में उग्र परिवर्तन होना निश्चित हो जाता है। शीत युद्ध के बाद सम्पूर्ण विश्व में वातावरण में परिवर्तन आया जिसके कारण पूर्व सोवियत संघ से विचारधारा को चुनौती मिली और वह वहाँ से अलग कर दी गई, इस पर चर्च ने यह महसूस किया कि अधिक राजनीति स्वरूप निर्मित करने पर विशिष्ट ध्यान केन्द्रित का परिणाम अधिक विरोधी और दुश्मन पैदा करना होता है, इसलिए लघु स्तर के प्रयासों पर ही अपना लक्ष्य रखना बेहतर होता है।

कैथोलिक चर्च की संस्थागत क्षमता को लैटिन अमेरिका की कुल जनसंख्या में प्रशिक्षित पुजारियों की संख्या के आधार पर व्यापक रूप से परिभाषित किया जा चुका है। यद्यपि उसमें गिरावट आई है फिर भी अधिक सावधानी के साथ समीक्षा की आवश्यकता है। जबकि यह सच है कि, चर्च का प्रभाव दूरदराज के चरागाह क्षेत्रों में कम हुआ है, यह सब कुछ होते हुए भी वास्तव में यह आश्चर्यजनक अनुभव है कि शैक्षिक और समाज कल्याण गतिविधियों में सामाजिक सम्मिलन में वृद्धि हुई है। इन वृद्धियों के एक साथ मिलाने से निष्कर्ष यह निकलता है कि लैटिन अमेरिका में निर्णय लेने के प्रमुख क्षेत्रों में वास्तविक राजनीतिक भूमिका विशेष वृद्धि हुई है।

## 10.3 चर्च और राजनीति

जैसे कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि कैथोलिक चर्च हमेशा ही लैटिन अमेरिका की राजनीति

में शामिल रही है। 1960 से पूर्व यह सम्बंध यथा स्थिति बनाए रखने के समर्थन में चर्चा का कार्य धीमा हो गया था। वाटिकन II से विशेषकर क्यूबा की क्रान्ति से इसकी राजनीतिक भूमिका ने विभिन्न सक्रिय स्वरूप और आकार प्राप्त किए थे, इन सबने उसी व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास किए थेः ये लैटिन अमेरिकी समाज के सभी प्रमुख क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव को संरक्षित किया था तथा उसको बनाए रखा था।

### 10.3.1 परम्परागत राजनीतिक भूमिका

औपनिवेशिक काल में, कैथोलिक चर्च ने लैटिन अमेरिका में परम्परागत सत्ता की संरचना में महान विधिसंगत प्रभाव की कमान अपने हाथ में ली थी।

अठाहरवीं शताब्दी के आरंभ में जब तक स्वतंत्रता प्राप्त की, सत्ता की संरचना में आधुनिक राज्य की बढ़ती हुई प्रभुसत्ता के साथ चर्च की परम्परागत सत्ता के बीच सम्बंधों में संघर्ष की स्थिति बन गई थी। परन्तु इसके बावजूद, राज्य के उदय के साथ, कैथोलिक चर्च लोकप्रिय मस्तिष्कों में था लोकप्रिय लोगों में अपने लिए लगातार अपना स्थान बनाती रही थी। समय के अंतराल में, आधुनिक लैटिन अमेरिका का राज्य जब सार्वजनिक वस्तुओं को लोगों तक पहुँचाने में असमर्थ रहा था उस समय चर्च ने नवीन विचारधारा के साथ समझौता किया और नए प्रयास करने आरम्भ किए जिससे समाज में अपना वर्चस्व और प्रभाव को बरकरार रखा था।

### 10.3.2 वर्तमान राजनीतिक भूमिका

नई राजनीतिक भूमिका बदतर सामाजिक, वास्तविकताओं को उज़ागर करते हए, उनके साथ को जोड़ने का प्रयास करना है। ये सामाजिक वास्तविकताएँ हैंः घोर गरीबी, शक्ति का विकास तथा सामाजिक असमानता में वृद्धि होना, तथा लैटिन अमेरिकी अधिकतर लोगों की औपचारिक शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की सुविधाओं तक न पहुँच पाने की कमी अथवा औपचारिक शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल का न होना आदि है। इन बदतर वास्तविकताओं को स्वीकार करना या मान्यता देना विभिन्न सरकारों द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्रों में प्रस्तुत की गई विकासात्मक विचारधारा का असफल होना है, इससे चर्च को दुगुना लाभ मिला। धर्म निरपेक्ष राज्य की ओर से हुई असफलताओं के कारण चर्च को अधिक लोकप्रियता मिली क्योंकि चर्च द्वारा दी गई वचनबद्धता और आध्यात्मिक मुक्ति को अस्वीकृति से जोड़कर देखा गया था।

वर्तमान राजनीतिक वातावरण में, इस भूमिका में धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा के माध्यम से प्रोटेस्टेंट चर्च को भी प्रभावित किया। सभी प्रोटेस्टेंट्स चर्चों में विशेषकर पेंतेकोस्ता को बहुत लाभ हुआ और वह सबसे अधिक संसाधनों से भरपूर और संगठित हुआ और लैटिन अमेरिका में सबसे अधिक प्रगति की। अनेक लोकप्रिय धार्मिक संगठन और अधिक संगठित हुए स्वरूप में पहले से अधिक दृश्यमान हुए थे। वास्तव में लैटिन अमेरिका धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और समाज तथा राजनीति के लिए दूर तक पहुँचने या सफल होने के लिए यह एक मंच बन गया था।

कैथोलिक चर्च लगातार लैटिन अमेरिका और विशेषकर चिली और वेनेजुएला में ईसाई लोकतान्त्रिक राजनीति दलों को अपनी विचारधारा से प्रभावित करती रही थी। इसके साथ ही बाकी क्षेत्रों में राजनीति परिदृश्य के बाहर भी रूढ़िवादी राजनीतिज्ञों के बीच सहयोग का महत्वपूर्ण हिस्सा प्राप्त किया था अथवा चर्च को राजनीतिज्ञों की ओर से अधिक से अधिक सहयोग और सहायता प्राप्त हुई थी।

### 10.3.3 राजनीति प्रतिस्पर्द्धा

हाल के वर्षों में, अन्य धर्मों तथा धर्म निरपेक्ष समूहों से प्रतिस्पर्द्धा होने के कारण कैथोलिक चर्च को

मज़बूर होकर लोकतंत्र, मानव अधिकार तथा लैटिन अमेरिका में लोकप्रिय सरकारों व प्रतिष्ठानों को ध्यान में रखते हुए बाज़ार चौक (मंच) या केन्द्र में उसकी उपयोगिता सम्बंध में महत्वपूर्ण युद्धों पर अपना निर्णय लिया। कैथोलिक चर्च ने राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में भी बढ़ोतरी की उसने सरकार के साथ मिलकर आपसी लाभदायक सहयोग के क्षेत्रों में शामिल किया था। कुछ देशों में जैसे कि ब्राज़ील में सामाजिक कल्याण और शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए राज्य से चर्च ने काफी लाभदायक धनराशि की आर्थिक सहायता प्राप्त की थी। शिक्षा में अपनी उपस्थिति स्थापित करने में भी चर्च का अपना स्वार्थ है, वह राष्ट्रीय स्तर के निर्णय लेने में अपनी विशेष स्थिति कायम रखने के लिए उसकी व्यापक कार्यनीति है जिसके तहत वे शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रही हैं।

नए परिदृश्य के अन्तर्गत जिसमें चर्च व्यापकजन, कैथोलिक पुजारियों की निष्ठाप्राप्ति के लिए कार्य कर रही है जिसमें पदानुक्रम व उच्च पदों के विभिन्न वर्गों के साथ समझौते सहमति प्राप्त कर रही है। अतः इन सबको और अधिक विस्तार देने के लिए वह और अधिक लोकतान्त्रिक बन गया है। इसलिए आन्तरिक दबावों, या बिना दबावों के लैटिन अमेरिका में निश्चित रूप से सबसे अधिक शक्तिशाली व ऐतिहासिक संस्थान का रूप धारण कर लिया है और अब वह और अधिक व्यावहारिक विचारों और कार्यनीतियों की समर्थक बन गया है।

### 10.3.4 धार्मिक नवाचार

कैथोलिक चर्च ने अन्य धार्मिक और धर्म निरपेक्ष शक्तियों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए बिल्कुल नवीन कार्यनीतियों को लागू किया है। इन उद्यमों को सम्बंधित क्षेत्रों में देश और अन्य क्षेत्रों पर विभिन्न स्वरूपों और आकारों में व्यावहारिक रूप से कार्य सम्पन्न किए हैं। उदाहरण के लिए, विद्वानों ने इस विषय पर विशेष ध्यान दिया है कि बोलिवियन में कैथोलिक ने पशुचारी क्षेत्रों में उच्च भूमि में बहुत नवाचार कार्य किए हैं। इन उच्च भूमियों में धर्मप्रचारकों का व्यापक रूप से प्रयोग किया जो सांस्कृतिक रूप से बिचौलियों का कार्य सम्पन्न किया है। इन धर्म प्रचारकों जिन्होंने विशेष उद्वणीर्य नीचे के स्तर पर अन्तःक्रिया की है, इन्होंने स्थानीय स्तर पर चर्च का प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया वहीं पर ये लोग स्थानीय देशज समुदाय के हिस्सेदार भी थे। इनके दोनों प्रकार के ज्ञान जिसमें देशज और चर्च शामिल था, चर्च और दूरदराज के समुदायों को एक दूसरे से संबद्ध कर दिया था। इन्होंने बहुत ही प्रभावी रूप से मध्यस्थ का कार्य पूरा किया था।

इसी प्रकार वेनेजुएला का उदाहरण लिया जा सकता है, कैथोलिक चर्च ने देश के दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय स्तर पर धार्मिक कार्मिकों को अत्यधिक पशुचारी स्वायत्तता उपलब्ध कराई थी। कैथोलिक धार्मिक व्यवस्था के सदस्यों को उप-धर्म प्रान्तों और सुसमाचार केन्द्रों के संरक्षण के लिए वहाँ के सबसे निम्न लोगों के साथ समझौते किए थे जो वहाँ का संचालन करते थे। यद्यपि परम्परागत कैथोलिक निम्न श्रेणी के लोग अधिकतर उच्च वर्ग के अड़ोस-पड़ोस में ही मिल जाते थे, हाल के वर्षों में निम्नतम गरीब क्षेत्रों में वृद्धि हुई है। दोनों उदाहरण कैथोलिक चर्च जैसी उच्च पदानुक्रम संस्थान ने लम्बे समय तक व्यावहारिक प्रदर्शन किया था। ये नवाचार लैटिन अमेरिका में चर्च के लिए शक्तिशाली भूमिका बनाए रखने के लिए ही केवल प्रासंगिक नहीं हैं, बल्कि उन्होंने सार्वभौमिक भूमिका को निर्देशित किया तथा चर्च ने एक युग तक महान राजनीतिक और भूमिका कार्यों द्वारा अपनी विशेषताओं का प्रदर्शन किया था। लैटिन अमेरिका के समाजों से लैटिन अमेरिका में इस प्रकार के व्यापक लाभों को प्राप्त करने की अपेक्षा है।

## 10.4 समाज में चर्च पर प्रमुख सिद्धान्त

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक सार्वभौमिक समुदाय में सरलतम कल्पना बनी हुई है कि चर्च और राज्य

दोनों की मौजूदा पहचान अलग-अलग है तथा दोनों एक साथ कुछ नहीं करेंगे। दोनों क्षेत्रों को जोड़ने के लिए सम्पूर्ण विश्व के सामान्य लोग और लोकप्रिय समुदाय प्रतिदिन इस प्रकार के प्रयास करते रहे हैं। समाज वैज्ञानिक आधुनिक समाज में धर्म की विशेषताओं को स्वछन्द रूप से सहजता से विशेषीकृत कर सकते और इसके स्थान पर सामाजिक परिवर्तन की सुविधाओं और उनको सामाहित करने में राष्ट्रीय स्तर और स्थानीय स्तर के साथ किए गए विभिन्न प्रकार के विश्लेषणों पर प्रकाश डाल सकते हैं।

### 10.4.1 धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्त

**धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्तों** के सम्बंध में सामान्यतः घोषणाएँ की जाती हैं अथवा भविष्यवाणी की जाती हैं कि धर्म के महत्व को सोचने का तरीका, उसका निष्पादन तथा जीवन दैनिक व्यक्तिगत व्यवहार में देखा जा सकता है तथा आधुनिक औद्योगिक दबावों के विकास के चलते हुए इसे हाशिए या नज़र अंदाज किया गया है। इस सिद्धान्त के सामाजिक और इतिहास के गहन साहित्य विशेषकर वेबर के विश्लेषण के अनुसार, उसे विकसित किया गया है। जहाँ पर *'धर्म निरपेक्ष'* का शाब्दिक अर्थ है सिविल या नागरिक, ग़ैर-धार्मिक अथवा किसी एक धर्म में आस्था न रखने वाला व्यक्ति जिसे आध्यात्मिकता और पुरोहितवाद से विशेषकर अलग रखा गया है। जहाँ तक धार्मिक संगठनों का विषय है जैसा कि कैथोलिक चर्च आजकल अधिक धर्म निरपेक्ष बन गया है, इसका अर्थ यह है कि अब वह लोक-परलोक जैसे मुद्दों (जैसे की जीवन और मृत्यु) तथा परलोक सम्बंध विषयों पर अधिक चर्चा या उस पर अपना विचार बिन्दु को केन्द्रित नहीं करता है। धर्म निरपेक्षीकरण का यह भी अर्थ है कि एक बार धार्मिक संगठनों द्वारा किए गए कार्यों के प्रति ग़ैर-धार्मिक संगठनों की जिम्मेदारी बन जाती हैं जैसे कि राज्या या नागरिक समाज के संगठन। संस्कृति संवृद्धि के कारण तथा इसका आधुनिक प्रौद्योगिकी-मूलक, मनोविज्ञान आधारित विश्व का निर्माण के संदर्भ में यह महसूस किया जाने लगा है कि समाज में कठिनाइयों व दिक्कतों में वृद्धि के साथ ही समानुपात में धार्मिक प्रभाव कम होता चला जाएगा। इसके साथ ही श्रमिकों के अल्पविकसित समुदाय व साधारण समाजों के लोग अन्य लोगों की तुलना में अधिक धार्मिक हैं। अब चाहे धर्म धर्म निरपेक्षीकरण के कितने ही सिद्धान्तों की रचना करता रहे किन्तु सामाजिक सिद्धान्तवादियों के समक्ष वर्तमान में टिके रहना असंभव है।

लैटिन अमेरिका के अनेक देशों में ईसाई अधिकारों के जन्म लेने के साथ ही अत्यन्त कठिन शक्ति का आविर्भाव हुआ है, जो राजनीतिक दलों तथा कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में दोनों में ही धर्म का प्रवेश हो गया है, उसका विशेष प्रभाव होने के कारण वास्तव में आप कह नहीं सकते हैं कि धर्म विलीन हो गया है। यह वास्तव में अनेकों मुखोटों या विभिन्न रूपों के साथ राजनीति और समाज में अपनी जड़ें फिर से जमाने का प्रयास कर रहा है। इस धार्मिक प्रवेश की जड़ों को फिर से अच्छी तरह से समझ कर उखाड़ फैंकने की अत्यन्त आवश्यकता है। धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्तवादियों का सहज कथन था कि धर्म और राज्य या राजनीति का क्षेत्र अलग है तथा अलग ही रहेगा। पिछले तीस वर्षों के लैटिन अमेरिकी अनुभव बताते हैं कि निश्चित रूप से मुक्त सहजीकरण के सिद्धान्त स्वमेय सिद्ध हो जाएँगे।

### 10.4.2 धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और नवाचार के सिद्धान्त

**धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और नवाचार के सिद्धान्तों** का मानना है कि धार्मिक बाज़ारवाद के विकास के साथ ही धार्मिक संगठन यह जानते हुए कि धर्म का प्रभाव लोगों की इच्छाओं के अनुसार उसमें नवाचार का प्रयोग कर रहे हैं। हालाँकि वे जानते हैं कि यह मृतः प्राय हैं। इस प्रकार के सिद्धान्तवादी यह तर्क देते हैं कि धार्मिक लोग आधुनिक माध्यमों का प्रयोग कर रहे हैं जैसे कि परिवहन और संचार ताकि वे लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। आधुनिक साधनों जैसे परिवहन और संचार के माध्यम से वे विश्व के दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाले धर्म के मानने वालों तक पहुँच बना लेते हैं। इस प्रक्रिया

में अब चर्च रेडियो, टेलीविजन, डाकुमेंटरी, और अन्य संचार के चैनलों, जैसे कि कम्प्यूटर और इंटरनेट आदि का प्रयोग करता है। इन चैनलों के प्रयोग से खर्चा कम होता है और इससे लाभ अधिक होता है, वे इनके माध्यम से संभावित क्षेत्रों में पहुँच जाते हैं जहाँ उनकी पहुँच संभव नहीं हो सकती थी।

जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि कैथोलिक चर्च को संस्थागत संसाधनों और क्षमता में ह्रासमान या घटते हुए साधनों का सामना करना पड़ा है किन्तु अब स्पष्ट हो गया है कि अब वे संचार के आधुनिक साधनों का प्रयोग करके लैटिन अमेरिका के लाखों लोगों तक अपने धार्मिक संदेशों के प्रसारित करने में सफल रहे हैं ये सिद्धान्त अप्रत्यक्ष रूप में यह बताते हैं कि धर्म अदृश्य नहीं हो सकता यानि समाप्त नहीं हो सकता है बल्कि यह पुनः दृश्यमान हो रहा है, अन्तर इतना है कि अब इसके रूप में परिवर्तन है या यह कह सकते हैं कि रूप बदलकर हमारे समक्ष प्रकट हो रहा है। धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और नवाचार के सिद्धान्तों के सम्बंध में अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है या तर्क देते हैं कि धर्म निरपेक्षता के पुराने सिद्धान्त गलत थे तथा परिवर्तनशील समाज में धर्म के सतत् प्रभाव को आँकने या उसके मूल्यांकन में बहुत ही सरल व सहज थे।

## 10.5 सारांश

हम यह बता चुके हैं कि कैथोलिक चर्च औपनिवेशिक काल से ही लैटिन अमेरिकी समाज में एक प्रबल संस्था के रूप में स्थापित रहा है। इसके बावजूद कुछ आधुनिक सामाजिक बलों के कारण समाज के कुछ क्षेत्रों में उसका प्रभाव कम होने लगा था। लोकतान्त्रिकरण के वर्तमान वातावरण में कैथोलिक चर्च को अन्य धर्मों की चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे कि प्रोटेस्टेंट नामकरण और धर्म निरपेक्ष समूहों जैसे कि राजनीतिक दल, मज़दूर संघों और समुदाय आधारित लोकप्रिय समुदायों की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। परन्तु इन प्रबल प्रतिस्पर्द्धाओं के सामने अड़ी रहा और अपनी हार नहीं मानी। उसने अपनी शक्ति को एकजुट किया व अपने संसाधनों से कुछ धर्मों और धर्म निरपेक्ष समूहों के साथ कुछ मामलों में बहुत सक्षमता के साथ चुनौती दी। यह कहना व्यर्थ होगा कि सभी धार्मिक और ग़ैर-धार्मिक शक्तियों ने लोकप्रिय सहयोग और विधिवत व कानूनी सहायता के लिए एक ही संसदीय क्षेत्र के लिए प्रतिस्पर्द्धा का निष्पादन किया था। इसके उदाहरण बोलीविया वेनेजुएला हैं जहाँ कैथोलिक चर्च ने लोकप्रिय गतिशीलता की नई कार्यनीतियों के वरणक्रम में बिल्कुल नवाचार में प्रतिस्पर्द्धा की थी। लोगों पर अपना प्रभाव को बनाए रखने के लिए अपने लक्ष्य में परिवर्तन नहीं किया, केवल परिवर्तित स्थितियों में लाभ प्राप्ति के लिए साधनों में परिवर्तन किया है।

इन प्रक्रियाओं में, इन नवाचारों के माध्यम से धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और नवाचारों को और अधिक मान्यता प्रदान की है। परन्तु धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्तों द्वारा प्रतिपादित घोषणाओं के अनुरूप विकास निश्चित रूप से नहीं हुआ है। अंत में सारांश यह है कि धर्म कभी अदृश्य नहीं होता है, यह संशोधित और नए संजाल व बनावट के स्वरूप में पुनः प्रकट होता है।

## 10.6 अभ्यास प्रश्न

1) आईबेरियन औपनिवेशिकरण से लैटिन अमेरिका में चर्च की संस्था की ऐतिहासिक भूमिका की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
2) समकालीन लैटिन अमेरिका के सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों से निपटने के लिए वैचारिक और संस्थागत की शर्तों में कैथोलिक चर्च द्वारा क्या नवाचार अपनाए गए?
3) लैटिन अमेरिका में कैथोलिक चर्च द्वारा चुनौतियों का कैसे सामना किया, संक्षेप में चर्चा कीजिए।
4) आधुनिक लैटिन अमेरिकी समाज में धर्म निरपेक्षीकरण के सिद्धान्तों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।